शोध मंथन Vol. XVI No.3 July.- Sept. 2025 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X, Impact Factor 8.877 (SJIF)
https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.54

मीराबाई के पदों में संगीताभिव्यक्ति

प्राप्तिः 31.08.2025
स्वीकृतः 10.09.2025

54

डॉ0 किरन शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर (संगीत विभाग)
रघुनाथ गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, मेरठ
ईमेलः *arunitas93@gmail.com*

सारांश

भारतीय भक्तिकालीन संगीत के क्षेत्र में मध्य युग में मीराबाई का अग्रण्य स्थान है। राजवंश में जन्मी मीरा ने अपने भक्तिमय भजनों से सम्पूर्ण भारतवर्ष को मुग्ध किया है। वैष्णव भक्ति कुल में जन्म लेने के कारण उनमें बचपन से ही भगवद् भक्ति के संस्कार प्राप्त हुए थे। कृष्ण भक्ति में मीरा को अपना राजमहल भी त्यागना पड़ा। हाथों में करताल एवं गले में तानपूरा लेकर उन्होंने कृष्ण भक्तिमय पदों को गाकर नष्त्य करना प्रारम्भ किया। मीरा के पद संगीत के रसभाव एवं लालित्य की दृष्टि से अत्यन्त श्रेष्ठ है। यद्यपि अन्य भक्त कवियों की तरह उनके पदों में राग–रागिनियों का उल्लेख नहीं मिलता, परन्तु उनके पदों में पाये जाने वाले संगीत विषयक उल्लेख उन्हें भक्ति और संगीत की श्रेष्ठ साधिका सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है।

मुख्य बिंदु

भक्तिकालीन, आध्यात्मिक, रसभाव, पद, लालित्य श्रेष्ठ साधिका।

संगीत ईश्वर प्रदप्त कला है जिसे भारतीय परम्परा में प्राचीन ऋषि मुनियों ने मोक्ष प्राप्ति का साधन माना है। भारतीय संगीत हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है। वैदिक काल से ही नारी का संगीत के साथ सम्बन्ध एवं योगदान रहा है नारी ही पृथ्वी की आदि शक्ति कही गयी है। वेदो, ग्रन्थों, पुराणों आदि में संगीत एवं नारी के सन्दर्भ में अनेकानेक उल्लेख प्राप्त होते हैं, ऋग्वेद में नृत्य एवं गान में नारी का उल्लेख इस प्रकार प्राप्त होता है–

''समुत्वा धीमिरस्वरन्हिन्वती स,
प्रजामयः विप्रभाजा विवस्वतः।''
''ऋषि पेशांसिवपेत नतुरि
वापोशतुर्वक्ष उस्त्रोव वर्जदम।''

संगीत की अधिष्ठानी देवी माँ सरस्वती हैं। उन्होंने ही नारदमुनि से संगीत का प्रचार प्रसार तीनों लोकों में कराया। सामवेद तो पूर्णतयः संगीत पर आधारित ग्रन्थ हैं। सामवेद एवं यजुर्वेद में भी संगीत में नारी के योगदान का उल्लेख प्राप्त होता है। वैदिककाल प्राचीनकाल, मध्यकाल हो अथवा आधुनिक काल भारतीय संगीत में नारी का योगदान सदैव ही अतुलनीय रहा है। मध्यकाल में ऐसी ही विदुषी गायिका के रूप में मीराबाई का नाम उल्लेखनीय है।

मध्यकालीन भारतीय संगीत में विदुषी गायिका के रूप में मीराबाई का नाम अमर है। मीराबाई का सम्पूर्ण जीवन ही संगीत की रसधारा से ओतप्रोत रहा है। यद्यपि भारतीय संगीत जगत में किसी भी युग में पुरूष संगीतज्ञो की कोई न्यून्ता नहीं रही। भरत, शारंगदेव से लेकर आधुनिक काल में प0वि0दि0 पलुस्कर एवं पं0 विष्णु नारायण भातखडे तक अनेकानेक संगीत पुरोधा हुए हैं। किंतु आश्चर्यजनक रूप से स्त्री संगीतज्ञों का आधुनिक काल की अपेक्षा प्राचीन काल एवं मध्य काल में एक अभाव सा दिखाई पड़ता है। इन दोनों कालों के मध्य हमें स्त्री संगीतज्ञों में एक मीराबाई का ही नाम दिखाई पड़ता है जो भक्ति काव्य तथा संगीत में प्रसिद्ध है।

मीरा का जीवन संगीत के प्रति समर्पित था। उनका जन्म राजस्थान में जोधपुर के राजघराने में हुआ था। जहाँ संगीतमय वातावरण था। राजघराने में उन्हें बाल्यकाल से ही संगीत जैसी ललित कलाओं के संस्कार स्वतः ही प्राप्त हो गये थे। वैष्णव कुल में उत्पन्न होने के कारण भगवद्भक्ति में भी उनकी परम आस्था थी।

यद्यपि मीरा का जन्म उस काल में हुआ था जब भारतीय संगीत अपने स्वर्ण युग में था। एक तरफ अकबर के दरबार में तानसेन, बैजू गोपाल नायक आदि जैसे महान संगीतज्ञ अपने संगीत की सुरधारा से जनमानस कर रहे थे तो दूसरी तरफ सूरदास, तुलसीदास तथा मीराबाई जैसे कवित संगीतज्ञ अपने भक्ति बिखेर रहे थे। मध्यकाल में भारतीय संगीत के इस भक्तिमय आध्यात्मिक स्वरूप की उन्नति में मीरा के संगीतमय पदो का बड़ा योगदान रहा है।

मीरा का विवाह राजस्थान में मेवाड़ के सिसौदिया राजवंश में हुआ था। जो संगीत के अनन्य उपासक 'महाराणा कुभा' के कारण विख्यात था। वे स्वयं संगीत के बड़े ज्ञाता थें। उन्होंने संगीत पर उनके ग्रंथ लिखे तथा 'संगीत रत्नाकर' एवं 'गीत गोविन्द' जैसे विश्व प्रसिद्ध ग्रंथ पर टीका भी लिखी थी। यद्यपि सिसौदिया राजवंश स्वयं ही संगीतमय वातावरण से ओत प्रोत था किंतु उन्हें मीरा का श्रीकृष्णा प्रेमय होकर हाथ में करताल गले में तंबूरा तथा पैसे में घुघरू बाँधकर आम जनमानस के मध्य नृत्यमय कीर्तन करना पसंद नहीं आया इसे राजकुल की शोभा के विपरीत समझा गया शायद यही कारण था कि कृष्ण की अनन्यभक्त मीरा को घरबार छोड़ना पड़ा। अपने घर एवं समाज दोनों से पीड़ा सहने के बाद उन्होंने अपने आपको भगवत भक्ति में समर्पित कर दिया। उनके पदों में विरह वेदना की अनुभूति की अभिव्यक्ति के शाष्वत् सौन्दर्य की झलक है।

मीरा के पदों में व्याप्त संगीतात्मकता–

भक्तिकालीन कवियों का संगीत से घनिष्ठ संबंध रहा है। संगीत गीति काव्य का प्रमुख तत्व है। हमारा संगीत प्रारंभ से ही आध्यात्मिकता से प्रेरित रहा है तथा भक्ति और आध्यात्मिकता एक दूसरे के पर्याय है। इसी भक्ति की अभिव्यक्ति जब संगीत के स्वरों के माध्यम से हुई तब मानव हदय

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.54

को रस के अथाह सागर की अनुभूति हुई। संगीत के अभाव में गीत का सौंदर्य प्रभावहीन हो जाता है। यदि संगीत की दृष्टि से देखें तो मीरा साहित्य पर्याप्त समृद्ध है। मीरा का काल संगीत एवं साहित्य दोनों का स्वर्ण युग कहा जाता है। मीरा ने अपने पदों में विविध राम रागिनियों को प्रयोग किया किया है जैसे मल्हार, तिलंग, सारंग, हमीर, कान्हड़ा, काफी पीलू, मुल्तानी, मघुमाद सारंग केदार कामोद, मालकोश, खमाज, आदि। उन्होंने अपने पदों में विषयानुकुल ही विविध रागों का प्रयोग किया है। संगीत की लय तथा भावाभिव्यक्ति की दृष्टि से मेरा के पद बेजोड़ है। मीरा के पदों में संगीत तत्वों के साथ मिलकर आत्मा एवं परमात्मा को एकाकार करने की शक्ति है। उनकी भक्तिमय पदों की संगीतमय अभिव्यक्ति तब चरम तल पर थी जब वे वृंदावन में आकर रहने लगी। मीरा के पदों के संगीत की स्वर लहरी आज भी भावुक हदय को आत्मविभोर कर देती है। मीरा के पदों में संगीत एवं लय का एक उदाहरण राग मल्हार में इस प्रकार अभिव्यक्त होता है।

''झुक आई बदरिया सावन की,
सावन की मनभावन की
सावन में उमण्यो मेरो मनवा
भवन सुनि हरि आवन की''

एक अन्य पद में कृष्ण की भक्ति एवं प्रेम की अभिव्यक्ति उन्होंने इस प्रकार की है।

''मैं तो सांवरे के रंग राची।''
साजि सिंगार बांधि पग घंघुरू लोक लाज तज नाची

इस प्रकार उनके द्वारा रचित पद 'पंग घुघरू बांघ मीरा नाची रे' में संगीत तथा साहित्य का सुन्दर समन्वय है। उनके द्वारा रचित होरी या धमार गायन का भी उल्लेख प्राप्त होता है यथा–

वाँ विरयां कब होशी ग्हारी,
हँस पिय कंठ डगावाँ।
मीरा होरी गावाँ।।

मीरा के पदो में प्रेम तथा विरह दोनों भावों छटा दिखाई पड़ती है। रस संगीत तथा काव्य दोनों की आत्मा है। मीरा साहित्य में व्याप्त संगीत तत्व ही उसकी विशिष्टता है। उनके पदों की कोई स्वरलिपि नहीं प्राप्त है किन्तु पदो में व्याप्त संगीत के कारण मीरा के पद आज भी प्रासंगिक है। मीरा संगीत की शक्ति से परिचित थी इसलिए उन्होंने ईश्वर के प्रेम में रचित अपने पदो को सुरों के माध्यम से अमरत्व प्रदान कर दिया। मीरा के पदों में जो विरह की व्याकुलता है उसकी अभिव्यक्ति के लिए उन्होंने संगीत का सहारा लिया। उनके पदों में काव्य की अपेक्षा संगीत की झलक अधिक है। मीरा द्वारा रचित भक्तिपरक पद ध्रुपदादि की शैली में गौड़ रूप में गाये गये किन्तु काव्य रचना 'टेक शैली' वाले पद होने की वजह से भजन कीर्तन अंग से गाये गये। टेक अंग के पदों की विशेषता है कि पद के दो चरणों को गायन के बाद टेक की पंक्ति पुनरावृत्ति होती है। इसी से भाव, लय तथा स्वर में एकात्मकता आती है।

मीरा के पदों में व्याप्त राग रागिनियों में चर्चरी, दादरा कहरवा, रूपक, धमार, तीनताल, झपताल दीपचंदी आदि विभिन्न तालों का भी प्रयोग हुआ है।

यद्यपि अन्य भक्ति कवियों की तरह उनके पदों पर राग रागिनियों का उल्लेख नहीं है किंतु उनकी पदावली ये व्याप्त संगीतात्मक उल्लेख तथा उनकी संगीतमयी काव्यायिव्यक्ति उन्हें संगीतज्ञ सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है। हम कह सकते है कि मीरा ने संगीत और साहित्य दोनों के क्षेत्र में नारी को एक गौरवमयी सम्मानित स्थान दिलाया है। केवल भारतवर्ष में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में उनकी कीर्ति फैल गयी विश्व के साहित्य और भक्ति के क्षेत्र में मीरा का नाम अमर को गया। भक्ति संगीत की इस अनन्य साधिका का देहावसान लगभग 1603 के लगभग हुआ ऐसा माना जाता है।

मीरा की भक्ति प्रेम करूणा एवं आध्यात्मिकता पर आधारित थी। जिन्हें संगीत के दिव्य स्वरों का साथ मिला। हाथ में इकतारा लेकर संगीत के सुरों से उन्होंने अपनी भावनाओं को प्रकट किया। संगीत के इसी 'गेयत्व' ने उनके पदों को अमर कर दिया। हम कह सकते हैं कि मीरा के पद संगीत के आभूषण से सुशोभित होकर जनमानस के लिए सरस एवं हदयग्राही बन गये उनके द्वारा रचित काव्य एवं संगीत की इस धारा से वर्तमान वायुमंडल भी गुंजायमान है। भारतीय संगीत एवं काव्य के इस सामंजस्य में मीरा का नाम विश्व में अमर कद दिया। उन्होंने भारतीय नारी को एक गौरवमयी स्थान पर प्रतिष्ठित किया जिस पर आने वाली पीढ़ियाँ भी गर्व करती रहेंगी।

सन्दर्भ

1. मीरा संगीत अंक – संगीत कार्यालय हाथरस
2. भक्ति संगीत अंक – संगीत कार्यालय हाथरस
3. नारी चेतना की प्रतीक मीराबाई – एस0एस0 गौतम
4. मीरा का काव्य और भक्ति आंदोहन – डा0 शेखर कुमार